संचारिका

शैक्षणिक सत्र 2025 - 26

संपादन :

राम शंकर कुशवाह

पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय के.रि.पु.ब. हैदराबाद

PM SHRI KENDRIYA VIDYALAYA CRPF HYDERABAD

संदेश

मेरे लिए यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय, केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल, हैदराबाद समग्र संभावनाओं से समन्वित बाल रचनाकारों एवं सुधी शिक्षकों के भाव एवं विचारों का प्रतिबिंब स्वरूप विद्यालय की वार्षिक ई- पत्रिका 'संचारिका' सत्र 2025-26 का प्रकाशन करने जा रहा है।

विद्यालय पत्रिका विद्यालय की सांस्कृतिक, शैक्षणिक, खेलकूद एवं अनेक रचनात्मक गतिविधियों के साथ-साथ साहित्यिक अभिरुचि का दर्पण तो है ही, साथ ही शिक्षार्थियों के समुचित सकारात्मक सर्वांगीण एवं सृजनात्मक विकास हेतु विद्यालय परिवार की प्रतिबद्धता का प्रमाण भी है। निःसंदेह इस पत्रिका के प्रकाशन से छात्रों में निहित सृजनात्मक प्रतिभा उभर कर सामने आ सकेगी तथा इन्हीं बाल रचनाकारों में से भविष्य में कुछ अच्छे पत्रकार, लेखक एवं कवि के रूप में राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाने में भी सफल होंगे।

वार्षिक ई- पत्रिका 'संचारिका' सत्र 2025-26 के प्रकाशन पर, मैं उन सभी अभिभावकों, शिक्षार्थियों, शिक्षक-शिक्षिकाओं तथा विद्यालय प्रबंधन समिति के सदस्य जिन्होंने इस ई-पत्रिका हेतु अपनी रचनाएँ एवं कलाकृतियाँ साझा कर पत्रिका को समृद्ध बनाया तथा पत्रिका के संपादक मंडल को जिन्होंने इसे सुयोजित कर एक नया आयाम दिया है को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ और बोर्ड की परीक्षाओं में अपनी भागीदारी दर्ज करने वाले छात्र-छात्राओं को अनेकानेक हार्दिक शुभकामनाएं और उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ। आशा है कि पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय, केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल, हैदराबाद अपने महत्त्वपूर्ण उद्देश्य को पूरा करते हुए निरंतर प्रगति पथ पर बढ़ता रहेगा ।

ई- पत्रिका 'संचारिका' सत्र 2025-26 के सफल प्रकाशन की शुभकामनाओं सहित।

श्री संतोष कुमार एन.
उपायुक्त
केन्द्रीय विद्यालय संगठन,
क्षेत्रीय कार्यालय, हैदराबाद

संदेश

यह अत्यंत हर्ष एवं प्रसन्नता का विषय है कि इस संभाग के केन्द्रीय विद्यालयों द्वारा अपने विद्यालय की ई- पत्रिका सत्र 2025-26 का प्रकाशन किया जा रहा है। किसी भी विद्यालय की ई- पत्रिका उस विद्यालय का दर्पण होती है उसी से विद्यालय की सांस्कृतिक और शैक्षिक गतिविधियों के साथ-साथ साहित्यिक में रुचि का भी पता चलता है।

शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा जारी नई शिक्षा नीति के सफलतापूर्वक कार्यान्वयन के लिए निपुण भारत योजना आरंभ की गई है। मैं यह आशा करता हूँ कि भारत सरकार की निपुण भारत योजना क्रियान्वयन में मेरा विद्यालयी परिवार मेरा सहयोग कर उच्चतम प्रदर्शन करेंगे और संभाग को शीर्ष स्तर पर ले जायेंगे।

पत्रिका के प्रकाशन पर मैं उन सभी अभिभावकों, छात्रों एवं शिक्षकों को बधाई देता हूँ, जिन्होंने अपने बच्चों के माध्यम से महत्वपूर्ण रचनात्मक योगदान देकर विद्यालय की ई- पत्रिका का प्रकाशन करवाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। पत्रिका के संपादक तथा संपूर्ण संपादक मंडल को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ। इस ई-पत्रिका के प्रकाशन से छात्रों में निहित सृजनात्मक प्रतिभा उभर कर सामने आएगी साथ ही विद्यार्थियों में भविष्य में आगे चलकर एक अच्छा लेखक, कवि तथा पत्रकार बनने की प्रतिभा भी विकसित होगी। यह मेरा पूर्ण विश्वास है कि विद्यालय की यह ई-पत्रिका विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में मील का पत्थर साबित होगी।

श्री रेजी वी. आर. नाथ,

सहायक आयुक्त,

केन्द्रीय विद्यालय संगठन,

क्षेत्रीय कार्यालय, हैदराबाद

प्राचार्य- सन्देश

प्रिय विद्यार्थियो!

विगत वर्ष की भाँति इस वर्ष भी विद्यालय अपनी ई-पत्रिका 'संचारिका' प्रकाशित करने जा रहा है। इसके लिए मैं संपादकीय समिति के अथक प्रयास को साधुवाद देता हूँ तथा विद्यार्थियों को अपनी कृतियों को प्रकाशित करवाने के लिए आवाहन करता हूँ। वस्तुतः केन्द्रीय विद्यालयों की नींव वसुधैव कुटुम्बकम् मंत्र के आधार पर हुई है, जिसमें समस्त विचार धाराओं का संतुलित समागम होता है अतः विद्यालय की ई-पत्रिका, राष्ट्रीय शिक्षानीति तथा बाल केन्द्रित व्यवस्था के अंतर्गत विद्यार्थियों की कल्पनाशील मौलिक ऊर्जा को सृजनात्मक क्षमता तथा आत्मबोध को मुखरित करने हेतु लेखन मंच प्रदान करती है जिससे उनकी अर्जित भावनाओं, भाषायी दक्षताओं व सृजनात्मक अभिव्यक्तियों का सम्यक विकास किया जा सके।

हमारा विद्यालय अपने लक्ष्यों की प्राप्ति की ओर निरंतर अग्रसर है। माननीय पूर्व प्रधानमंत्री भारतरत्न स्व. श्री अटल बिहारी बाजपेयी की कुछ पंक्तियाँ यहाँ सुसंगत प्रतीत होती हैं।

हार नहीं मानूँगा, रार नहीं ठानूँगा,

काल के कपाल पर लिखता मिटाता हूँ,

गीत नया गाता हूँ।

विद्यालय की ई-पत्रिका की इस प्राण प्रतिष्ठा में अपने अनमोल संदेश एवं शुभाशीष द्वारा हमारा मार्गदर्शन करने के लिए हमारे उपायुक्त महोदय एवं सहायक आयुक्त महोदय के प्रति विद्यालय परिवार हृदय से आभार व्यक्त करता है।

विद्यार्थियों की नैसर्गिक प्रतिभा एवं शिक्षकों तथा अभिभावकों के सहयोग एवं संबल हेतु हृदय से धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ, आशान्वित हूँ कि इस ई-पत्रिका के माध्यम से हम अपने शैक्षणिक, सांस्कृतिक एवं नवीन लक्ष्यों की प्राप्ति के मार्ग पर अग्रसर होंगे।

मैं अपने संपादकीय मण्डल को विशेषरूप से शुभकामनाएँ देता हूँ जिनके अथक प्रयास से इस इस ई- पत्रिका 'संचारिका' का प्रकाशन पुनः संभव हो सका।

साधुवाद!

प्राचार्य

पी.एम.श्री. केन्द्रीय विद्यालय, के.रि.पु.ब. हैदराबाद

सरस्वती वंदना

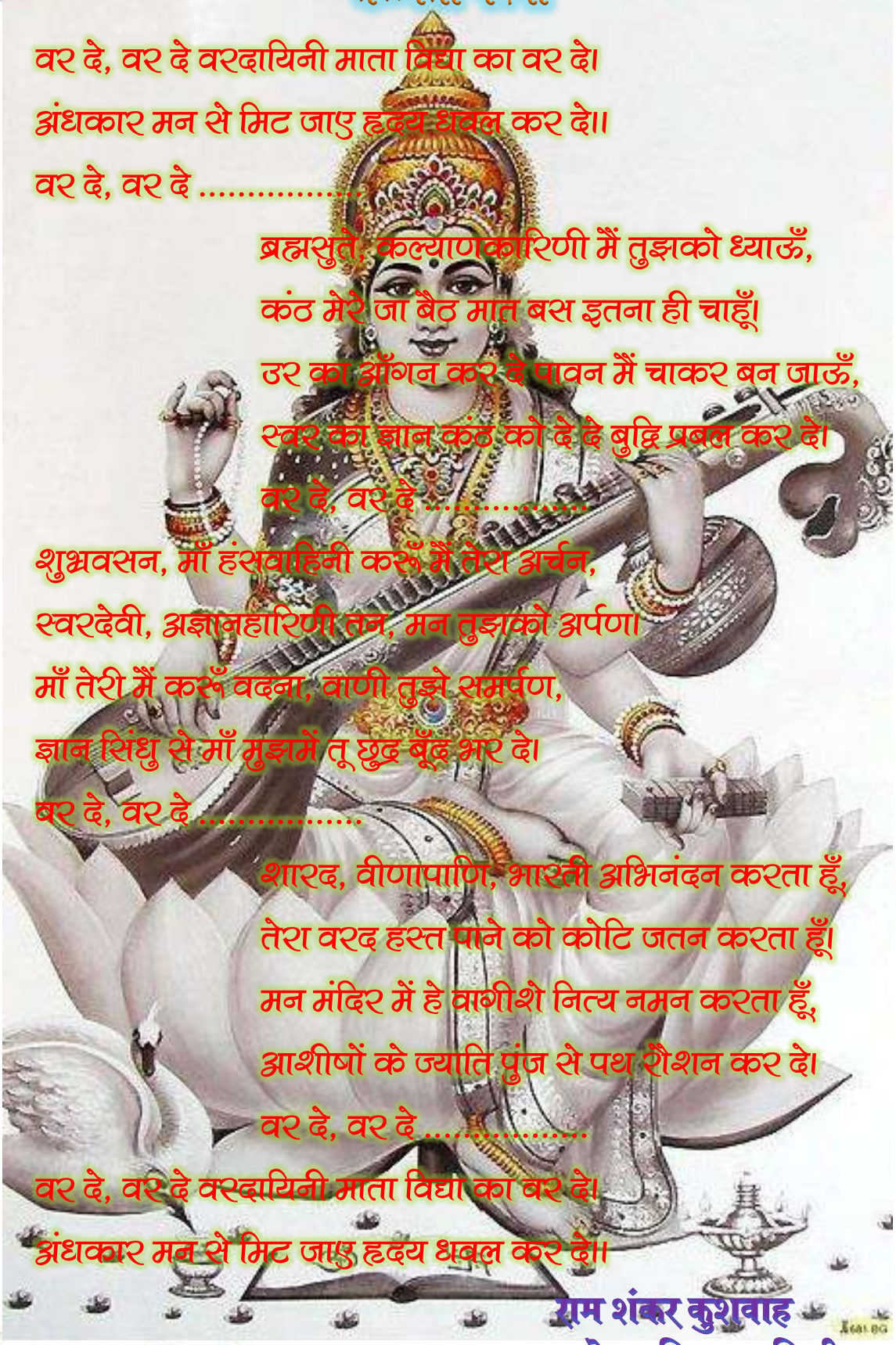

वर दे, वर दे वरदायिनी माता विद्या का वर दे।
अंधकार मन से मिट जाए हृदय धवल कर दे।।
वर दे, वर दे .....

ब्रह्मसुते, कल्याणकारिणी मैं तुझको ध्याऊँ,
कंठ मेरे जा बैठ मात बस इतना ही चाहूँ।
उर का आँगन कर दे पावन मैं चाकर बन जाऊँ,
स्वर का ज्ञान कंठ को दे दे बुद्धि प्रबल कर दे।
वर दे, वर दे .....

शुभ्रवसन, माँ हंसवाहिनी करूँ मैं तेरा अर्चन,
स्वरदेवी, अज्ञानहारिणी तन, मन तुझको अर्पण।
माँ तेरी मैं करूँ वदना, वाणी तुझे समर्पण,
ज्ञान सिंधु से माँ मुझमें तू छुद्र बूँद भर दे।
वर दे, वर दे .....

शारद, वीणापाणि, भारती अभिनंदन करता हूँ,
तेरा वरद हस्त पाने को कोटि जतन करता हूँ।
मन मंदिर में हे वागीशे नित्य नमन करता हूँ,
आशीषों के ज्याति पुंज से पथ रौशन कर दे।
वर दे, वर दे .....

वर दे, वर दे वरदायिनी माता विद्या का वर दे।
अंधकार मन से मिट जाए हृदय धवल कर दे।।

राम शंकर कुशवाह
स्नातकोत्तर शिक्षक, हिन्दी

विद्यालय के नियमित कर्मचारी

क्र.	नाम	पद
1	श्री जी. पी. डी. क्रिस्टी	प्राचार्य
2	श्री मलकी साब	उप–प्राचार्य
3	श्री श्री पी. रंगय्या	स्नातकोत्तर शिक्षक, गणित
4	श्री भीमन्ना धारावतु	स्नातकोत्तर शिक्षक, जीव विज्ञान
5	श्रीमती बी. माधवी	स्नातकोत्तर शिक्षक, भौतिक शास्त्र
6	श्री राम शंकर कुशवाह	स्नातकोत्तर शिक्षक, हिन्दी
7	श्रीमती कीर्ति अग्रवाल	स्नातकोत्तर शिक्षक, कम्प्यूटर विज्ञान
8	श्री मो. अब्दुल आई. शरीफ	प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक, विज्ञान
9	श्री जे. अंजय्या	प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक, गणित
10	श्रीमती पी. सुशीला	प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक, विज्ञान
11	श्रीमती ए. ज्योति	प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक, गणित
12	श्रीमती मोनिका	प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक, सामाजिक विज्ञान
13	श्रीमती आमेना	प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक, सामाजिक विज्ञान
14	श्री जी. भरत चंद्र राज	प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक, गणित
15	श्री जी. जयन्ना	प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक, कला
16	श्री भास्कर रतलावत	प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक, पुस्तकालयाध्यक्ष
17	श्री जी. बी. पद्मा राव	प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक, शारीरिक शिक्षा
18	श्रीमती कल्याणी गीता	प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक, हिन्दी
19	श्री नवीन कुमार सूत्रकार	प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक, संस्कृत
20	सुश्री साक्षी आहूजा	प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक, अँग्रेजी
21	श्रीमती किरण	प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक, अँग्रेजी
22	श्रीमती सरिता	प्राथमिक शिक्षक
23	श्रीमती मालविका त्रिपाठी	प्राथमिक शिक्षक
24	श्रीमती मुस्कान	प्राथमिक शिक्षक
25	सुश्री पूजा रानी	प्राथमिक शिक्षक
26	श्रीमती ज्योति सिंह	प्राथमिक शिक्षक
27	श्री नीला राहुल	प्राथमिक शिक्षक
28	श्री आशुतोष शुक्ला	प्राथमिक शिक्षक
29	श्री अंकुर सिंह	प्राथमिक शिक्षक
30	श्रीमती कल्पना तोमर	प्राथमिक शिक्षक
31	सुश्री एम. शांति	प्राथमिक शिक्षक
32	सुश्री मेघा वैष्णव	प्राथमिक शिक्षक
33	श्रीमती वैशाली	प्राथमिक शिक्षक
34	श्रीमती नैना देवी	प्राथमिक शिक्षक
35	सुश्री निशा शर्मा	प्राथमिक शिक्षक
36	श्री पी. शरत चंद्र	समूह 'ग'

विद्यालय के संविदा कर्मचारी

क्र.	नाम	पद
1	श्री मुरली कृष्ण सुनकारा	स्नातकोत्तर शिक्षक, रसायन विज्ञान
2	श्रीमती सीमा	स्नातकोत्तर शिक्षक, अँग्रेजी
3	श्रीमती मंजू पठान	वरिष्ठ कंप्यूटर प्रशिक्षक
4	श्रीमती मुकेश बाई	प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक, हिन्दी
5	श्रीमती हिना मोहम्मद	प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक, सामाजिक विज्ञान
6	श्रीमती पद्मा एस.	प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक, सामाजिक विज्ञान
7	श्रीमती तरन्नुम के.एम. शेख	प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक, सामाजिक विज्ञान
8	सुश्री बी. ममता	प्राथमिक शिक्षक
9	श्रीमती राजेश्वरी. एम.	प्राथमिक शिक्षक
10	श्रीमती मुदिमाला अनीता	प्राथमिक शिक्षक
11	श्रीमती के. स्वाति	प्राथमिक शिक्षक
12	सुश्री के. स्नेह प्रिया	प्राथमिक शिक्षक
13	श्रीमती मुदस्सिरा बेगम	प्राथमिक शिक्षक
14	श्रीमती लक्ष्मी बाई एम.	कनिष्ठ कंप्यूटर प्रशिक्षक
15	श्री बोम्मकांति प्रवीण	खेल प्रशिक्षक
16	श्री विष्णु कुमार के.	डी. ई. ओ.
17	सुश्री सीता श्रीवाणी	अटल प्रयोगशाला प्रशिक्षक

आज की नारी — संघर्ष से शिखर तक

आज की नारी अब मौन नहीं,
वो सवाल भी है, समाधान भी।
घर की चौखट से सपनों के आकाश तक,
उसके कदमों की है अपनी पहचान भी।

कंधों पर ज़िम्मेदारियों का भार सही,
पर आँखों में थकान नहीं।
हर ठोकर को सीढ़ी बनाकर,
उसने हार को माना पहचान नहीं।

कलम भी उसी की, कर्म भी उसी का,
निर्णय लेने का साहस भी।
आज की नारी सिर्फ़ साथ नहीं चलती,
वो राह बनाती है — इतिहास भी।

निशा शर्मा
प्राथमिक अध्यापक

जननी (माँ)

माँ, तुम पृथ्वी हो
तुम्हारी संतान ही तुम्हारी शक्ति है
माँ, तुम धरती हो
तुम्हारा जन्म ही एक रहस्य है
'बिग बैंग' की थ्योरी में तुम्हारा आगमन
छिपा हुआ है, जिस पर विश्वास करना
कठिन है।
इस आकाशगंगा में,
इस सौर मंडल में,
तुम्हारा घूमना
अत्यंत मनमोहक है।
हे माँ! तुम्हारी माँ कौन है?
तुम्हारे पिता कौन हैं?
तुम्हारा जन्म कैसा था?
यह कोई नहीं जानता।
तुमने कितने उतार-चढ़ाव देखे हैं,
क्या कोई तुम्हारी मदद के लिए था?
या तुम अकेली ही थीं?
तुम बड़े वेग से घूमती हो,
बिना थके निरंतर चलती हो।
उल्काएँ और पुच्छल तारे
तुम्हारे शत्रु हैं या मित्र, समझ नहीं आता।
तुम हमेशा सुंदर दिखती हो,
पूर्ण गर्व के साथ खड़ी हो।
तुम्हें किसने पहचाना?
किस माँ ने तुम्हें अपनी गोद में लिया?
तुम्हारे चारों ओर घूमने वाले ग्रह,
उल्काएँ, पुच्छल तारे और नक्षत्र,
धूल और मिट्टी,
तुम्हारे ही अंश हैं, तुम्हारा ही विस्तार हैं।
वे तुम्हें घेर कर,
काले कौवों की तरह देखते रहते हैं।
करोड़ों वर्ष तुम्हारी आयु है,
करोड़ों जीवों की तुम सांस हो।
कितने प्रलय,
कितने विनाश तुमने झेले हैं?
तुम कितनी धैर्यवान हो!
युग बीत गए,
तुमने अपने कितने बच्चों को खो दिया?
राक्षसी छिपकलियाँ (डायनासोर), बाघ,
विशाल मैमथ हाथी,
कितने ही पशु-पक्षी और जीव
अब विलुप्त हो चुके हैं।
वे सब तुम में ही विलीन हो गए।
तुमने कितना विलाप किया होगा!
इसीलिए हे माँ, तुम्हें
भूकंप, ज्वालामुखी,
तूफान और बवंडर,

क्रोध और संताप का सामना करना पड़ा।
तुम्हारे प्रकोप से धरती काँपती है,
तुम्हारी नाराजगी आग और विनाश है।
तुम्हारी बेचैनी में पहाड़ों का खिसकना है,
तुम्हारी वेदना में प्रलयंकारी बाढ़ है।
तुम्हारी प्यास जंगल की आग है,
तुम्हारी आँखों की पुतलियाँ ही रेगिस्तान हैं।
जब तुम रोती हो, तो वे बर्फ की नदियाँ बन जाती हैं,
तुम्हारी मुस्कान ही वसंत की हरियाली है।
माँ धरती की गोद में,
उसके इस रौद्र रूप का कारण क्या है?
मैं कल्पना कर सकता हूँ...
तुम्हारे शरीर में छिपे
कोयले और तेल को जब वे (इंसान)
निकालते हैं,
तुम्हारे सीने पर जब वे इमारतें बनाते हैं,
जंगलों को काटकर जब कंक्रीट के महल खड़े करते हैं,
तुम्हारी नसों में बहने वाली नदियों को जब प्रदूषित करते हैं,
तुम्हारी शांत आँखों में धूल झोंकते हैं,
तुम्हारे ऊंचे शिखरों और गहरी घाटियों को जब वे नष्ट करते हैं,
क्या तुम्हें दर्द नहीं होता?
क्या यह भी सच नहीं है?
कि माँ की कोख में पल रही नन्हीं जान को,
सिर्फ इसलिए मार दिया जाता है क्योंकि वह लड़की है...
सड़कों पर और एकांत स्थानों पर,
अबला स्त्रियों पर अत्याचार होते हैं...
घर के भीतर और बाहर,
हर तरफ, हर जगह,
ये दानवीय कुकृत्य हो रहे हैं।
स्त्री जाति का अस्तित्व खतरे में है।
कामुक भेड़ियों से इस दुनिया को कैसे बचाया जाए, माँ?
हे धरती माँ!
तुम्हारे बच्चों के लिए सदा कल्याण हो।
इन मनुष्यों के मस्तिष्क में सद्बुद्धि आए,
ताकि वे इन कुप्रथाओं को दूर करें।
एक 'वसुधैव कुटुंबकम' (पूरा विश्व एक परिवार) का निर्माण हो,
हे माँ, हमें ऐसी शक्ति और सत्य का मार्ग दिखाओ।
माँ, तुम जागृत हो,
इस अनंत लोक की तुम आदि हो!
तुम ही अंत हो!

भीमन्ना धारावतु,
स्नातकोत्तर शिक्षक, जीव विज्ञान

संस्कृत व्याकरण परिचयः

दैनिकजीवने स्वविचाराणां सम्यक् अभिव्यक्तये भाषायाः आवश्यकता अनिवार्या अस्ति।

"भाष्यतेऽनया इति भाषा" —अस्याः परिभाषायाः अनुसारं या मनोभावान् प्रकाशयति, सा भाषा इति कथ्यते।

भाषायाः निरन्तरविकासाय तस्याः सुव्यवस्थितं व्याकरणं अत्यावश्यकम्। निश्चितैः सरलैश्च नियमैः विना भाषा दीर्घकालं जीविता न भवति। अनेके कृत्रिमभाषाः कठिनव्याकरणकारणेन नष्टाः अभवन्। अतः व्याकरणं भाषायाः प्राणतत्त्वं भवति।

वेदानां षडङ्गेषु व्याकरणं प्रमुखम् अङ्गम् अस्ति। कस्यापि भाषायाः सम्यक् परिचयाय तस्य व्याकरणज्ञानं आवश्यकम्। यथा मनुष्यस्य मुखेन तस्य परिचयः ज्ञायते, तथा संस्कृतभाषायाः मुखं व्याकरणम् एव।

व्याकरणं तत् शास्त्रम् अस्ति, यत्र प्रकृतिप्रत्ययविभागेन शब्दानां विश्लेषणं क्रियते। महाभाष्ये व्याकरणं "शब्दानुशासनम्" इति कथितम्। एतत् अनुशासनं लौकिकवैदिकयोः उभयोः शब्दानां विषये अस्ति।

पाणिनीयशिक्षायां उक्तम्—

"मुखं व्याकरणं स्मृतम्।"

वेदानां षडङ्गेषु व्याकरणं श्रेष्ठतमम् मन्यते, न केवलं वेदपुरुषस्य मुखात् उत्पन्नत्वात्, अपि तु सर्वशास्त्राणां मूलत्वात्।

महाभाष्यकारः पतञ्जलिः उक्तवान्—

व्याकरणज्ञानं धर्माय, यशसे, तथा मोक्षाय अपि फलप्रदम् भवति।

व्याकरणस्य परम्पराः-

व्याकरणाध्ययने द्वे परम्परे स्तः—

(१) बृहस्पतिपरम्परा तथा

(२) माहेश्वरीपरम्परा।

बृहस्पतिपरम्परायां कथ्यते यत् ब्रह्मा संस्कृतशब्दज्ञानं बृहस्पतये अददात्। बृहस्पतिना इन्द्राय, ततः इन्द्रेण अग्नि-यम-रुद्र-वायु-वरुणादिभ्यः तत् ज्ञानं प्रसारितम्। अस्यां परम्परायां बृहस्पतिः प्रथमः प्रवक्ता मन्यते, तथा इन्द्रः प्रथमः वैयाकरणः इति अपि कथ्यते।

माहेश्वरीपरम्परानुसारं भगवान् महेश्वरः प्रथमः वैयाकरणः आसीत्। महेश्वरसूत्रैः पाणिनिः व्याकरणज्ञानं प्राप्तवान्, अतः एषा परम्परा पाणिनीयपरम्परा इति अपि कथ्यते। एषा परम्परा तर्कयुक्ता, वैज्ञानिके च दृष्ट्या सर्वश्रेष्ठा मन्यते।

व्याकरणस्य सम्प्रदायाः-

उपरोक्त एतयोः परम्परयोः आधारेण व्याकरणं नव सम्प्रदायेषु विभक्तम्—

(१) ऐन्द्रः, (२) चान्द्रः, (३) काशकृत्स्नः,
(४) कौमारः, (५) शाकटायनः, (६) सारस्वतः,
(७) आपिशलः, (८) शाकल्यः, (९) पाणिनीयः।

श्लोकः—

"ऐन्द्रं चान्द्रं काशकृत्स्नं कौमारं शाकटायनम्।
सारस्वतं चापिशलं शाकल्यं पाणिनीयकम्॥"

व्याकरणस्य त्रिमुनयः-

पाणिनिः, कात्यायनः (वररुचिः) तथा पतञ्जलिः—एते व्याकरणस्य त्रिमुनयः इति कथ्यन्ते।

पाणिनेः अष्टाध्यायी, कात्यायनस्य वार्तिकम्, पतञ्जलेः महाभाष्यम्—एतानि त्रयी रचना इति जगत्सु प्रसिद्धानि।

संस्कृत विभागाध्यक्षः- नवीन कुमार सूत्रकारः
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षकः

हिंदी पखवाड़ा 2025-26 का प्रतिवेदन

- आज दिनांक 16 सितंबर 2025 को केन्द्रीय विद्यालय के. आ. पु. ब. हैदराबाद में हिंदी पखवाड़े का शुभारंभ हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर एक भव्य समारोह के साथ हुआ। इस समारोह का शुभारंभ प्रातःकालीन सभा में ही विद्यालय के प्राचार्य श्री जी.पी.डी. क्रिस्टी जी ने दीप प्रज्वलन कर किया। इस सुअवसर पर विद्यालय की कक्षा 6 एवं 7 की बालिकाओं द्वारा हिन्दी गीत की एक सुंदर प्रस्तुति दी गयी। तत्पश्चात् विद्यालय की कक्षा 10 की छात्रा कोमल कुमारी झा ने हिंदी के वैभव और समृद्धि के वर्णन हेतु एक सुंदर कविता प्रस्तुत की। श्री राम शंकर कुशवाह, स्नातकोत्तर शिक्षक, हिन्दी ने हिंदी भाषा के वैभव और समृद्धि पर एक विस्तृत व्याख्यान दिया। आज ही के दिन हिंदी पखवाड़ा 2025–26 की प्रथम प्रतियोगिता के रूप में सुलेख प्रतियोगिता आयोजित की गयी। जिसमें विद्यालय के विद्यार्थियों ने बढ़–चढ़कर भाग लिया।
- दिनांक 17 सितंबर 2025 को श्रुतलेख प्रतियोगिता में कक्षा 6 से बारहवीं तक के बच्चों ने प्रतियोगिता में अधिक से अधिक संख्या में भाग लिया। जिसकी प्रभारी श्रीमती मुकेश बाई, प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक, हिन्दी रहीं।
- दिनांक 18 सितंबर 2025 को कक्षा 6 से 10 तक के बच्चों के लिए श्री नवीन कुमार सूत्रकार, प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक, संस्कृत ने कहानी सुनाओ प्रतियोगिता संपन्न कराई।
- दिनांक 19 सितंबर 2025 को पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार श्रीमती कल्याणी गीता प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक, हिन्दी ने निबंध लेखन प्रतियोगिता संपन्न कराई।
- दिनांक 20 सितंबर 2025 को श्रवण कौशल प्रतियोगिता का आयोजन श्री राम शंकर कुशवाह, स्नातकोत्तर शिक्षक, हिन्दी द्वारा सुनिश्चित किया गया, जिसमें माध्यमिक कक्षाओं के विद्यार्थियों ने बढ़ चढ़कर भाग लिया।
- दिनांक 21 सितंबर 2025 को रविवार का अवकाश होने के कारण हिन्दी पखवाड़े के सभी कार्यक्रम स्थगित रहे।
- दिनांक 22 सितंबर 2025 को कक्षा 6 से 10 तक के बच्चों के लिए श्री राम शंकर कुशवाह, स्नातकोत्तर शिक्षक, हिन्दी द्वारा अशुद्धि संशोधन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें सभी बच्चों का हिन्दी की वर्तनी व वाक्य संगठन कला की जाँच की गयी। जिसमें विद्यार्थियों को उनकी श्रेणी के अनुसार एक प्रश्न–पत्र

वितरित किया गया तथा उनकी अशुद्धि संशोधन क्षमता का मूल्यांकन कक्षावार प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय विजेताओं के नामों को निर्धारित कर किया गया।

- दिनांक 23 सितंबर 2025 को विद्यालय के बच्चों ने दोहा गायन प्रतियोगिता में विभिन्न संत कवि–कवयित्रियों के दोहों को लयबद्ध तरीके से गाया। हिंदी पखवाड़े की इस प्रतियोगिता में श्री नवीन कुमार सूत्रकार, प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक, संस्कृत ने निर्णायक की भूमिका का निर्वाह किया।
- दिनांक 24 सितंबर 2025 को पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार विद्यालय के पुस्तकालय में पुस्तकालयध्यक्ष श्री भास्कर रतलावत के सहयोग से पुस्तकालय में उपलब्ध हिंदी पुस्तकों की एक प्रदर्शनी लगायी गई। जिससे कि विद्यालय में अध्ययनरत् अधिक से अधिक विद्यार्थी हिंदी पठन–पाठन की ओर प्रेरित, प्रोत्साहित एवं आकर्षित हो सकें।
- दिनांक 25 सितंबर 2025 को अनुवाद प्रतियोगिता का आयोजन श्री राम शंकर कुशवाह, स्नातकोत्तर शिक्षक, हिन्दी द्वारा सुनिश्चित किया गया, जिसमें माध्यमिक कक्षाओं के विद्यार्थियों ने बढ़ चढ़कर भाग लिया और प्रशंसनीय प्रदर्शन भी किया। जिसमें विद्यार्थियों को उनकी श्रेणी के अनुसार एक प्रश्न–पत्र वितरित किया गया तथा उनकी अनुवाद क्षमता का मूल्यांकन कक्षावार प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय विजेताओं के नामों को निर्धारित कर किया गया।
- दिनांक 27 सितंबर 2025 से शरद कालीन अवकाश प्रारंभ होने के कारण दिनांक 26 सितंबर 2025 को ही विद्यालय की प्रार्थना सभा के साथ ही हिंदी पखवाड़े का समापन बड़े ही हर्षोल्लास व धूमधाम से किया गया। इसमें श्री राम शंकर कुशवाह, स्नातकोत्तर शिक्षक, हिन्दी ने मंच संचालन करते हुए विद्यालय के प्राचार्य श्री जी.पी. डी. क्रिस्टी जी को मुख्य अतिथि के रूप में मंच पर आमंत्रित कर माँ सरस्वती की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्ज्वलन कराकर समारोह का शुभारंभ किया। इसी क्रम में विद्यालय की कक्षा 9 की छात्राआं ने हिन्दी का गौरव गान एक गीत के माध्यम से प्रस्तुत कर समस्त विद्यालय का मन मोह लिया। इसी कड़ी में प्राचार्य श्री जी.पी.डी. क्रिस्टी जी ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए आशीर्वचन भाषण प्रस्तुत कर कार्यक्रम का समापन किया।

राम शंकर कुशवाह,
स्नातकोत्तर शिक्षक, हिन्दी

पी.एम.श्री केन्द्रीय विद्यालय के.रि.पु.ब. हैदराबाद में खेल दिवस समारोह का आयोजन

आज दिनांक 11 फरबरी 2026 को पी. एम. श्री केन्द्रीय विद्यालय सीआरपीएफ बारकस में वार्षिक खेल महोत्सव का आयोजन बड़े ही हर्षोल्लास के साथ किया गया।

इस अवसर पर वार्षिक खेल महोत्सव में मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. विलुबो, मुख्य चिकित्सा अधिकारी, कमांडेंट, सीआरपीएफ, हैदराबाद पधारे। कार्यक्रम का शुभारंभ प्रातः 09:00 पर मुख्य अतिथि महोदय के आगमन पर स्काउट एवं गाइड द्वारा उन्हें गार्ड ऑफ ऑनर देने के साथ प्रारंभ हुआ। मुख्य अतिथि के सम्मान में विद्यालय की छात्राओं ने पारंपरिक स्वागत गीत प्रस्तुत किया। प्राचार्य श्री जीपीडी क्रिस्टी द्वारा मुख्य अतिथि का औपचारिक स्वागत किया गया। इसके बाद मुख्य अतिथि महोदय ने खेल दिवस का शुभारंभ मशाल जलाकर किया। खिलाड़ियों द्वारा मशाल रिले संपन्न कर खिलाड़ियों में खेल-भावना बनाए रखने के लिए शपथ ग्रहण भी की गई।

खेल दिवस की झलकियों में विभिन्न सदनों के रंग-बिरंगे बच्चों द्वारा प्रस्तुत मार्च पास्ट, प्राथमिक कक्षाओं के बच्चों की एरोबिक्स, माध्यमिक विद्यार्थियों द्वारा नृत्य प्रस्तुति आदि रहीं। मैदान में खिलाड़ियों के द्वारा विभिन्न खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि द्वारा विजेताओं को पुरस्कार वितरण कर उनका उत्साहवर्धन किया गया। तत्पश्चात् मुख्य अतिथि ने अपने संबोधन में सभी विद्यार्थियों को भविष्य में उस व्यवसाय को अपनाने का संदेश दिया जिसमें उनकी सच्ची लगन हो। इसके साथ ही मुख्य अतिथि के द्वारा खेल दिवस को संपन्न घोषित किया गया। कार्यक्रम के अंत में विद्यालय के वरिष्ठतम शिक्षक श्री रंगैया ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया और इस तरह वर्षिक खेल दिवस का राष्ट्रगान के साथ समापन हुआ। यह संपूर्ण खेल दिवस विद्यालय के शारीरिक शिक्षा शिक्षक श्री पद्मा राव के दिशा निर्देशन में संपन्न हुआ।

राम शंकर कुशवाह,
स्नातकोत्तर शिक्षक, हिन्दी

हिमालय विभाजन

हिमालय पर्वत श्रृंखला को उत्तर से दक्षिण दिशा में तीन मुख्य भागों में बाँटा जाता है–

महान हिमालय (हिमाद्रि)

मध्य हिमालय (हिमाचल)

शिवालिक

यह विभाजन पर्वतों की ऊँचाई, संरचना, जलवायु और प्राकृतिक विशेषताओं पर आधारित है, जो हिमालय को समझने में मदद करता है।

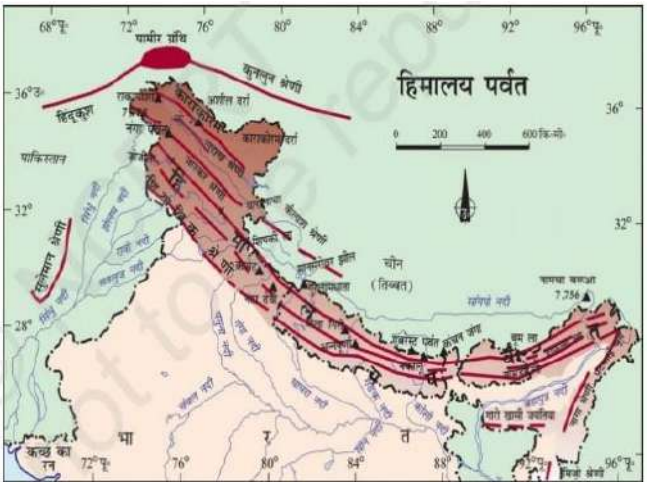

हिमालय पर्वतमाला विश्व की सबसे विशाल और ऊँची पर्वत श्रृंखलाओं में से एक है। यह भारत की उत्तरी सीमा से गुजरती है और न केवल भौगोलिक सुरक्षा प्रदान करती है, बल्कि जलवायु, नदियों, वनस्पति और मानव जीवन पर भी गहरा प्रभाव डालती है। हिमालय को उत्तर से दक्षिण की दिशा में मुख्यतः **तीन भागों** में बाँटा जाता है– **महान हिमालय (हिमाद्री)**, **मध्य हिमालय (हिमाचल)** और **शिवालिक (निम्न हिमालय)**।

महान हिमालय सबसे उत्तरी और सबसे ऊँचा भाग है। इसकी औसत ऊँचाई 6000 मीटर से अधिक है और वर्षभर बर्फ से ढका रहता है। इस क्षेत्र में माउंट एवरेस्ट और कंचनजंघा जैसी ऊँची चोटियाँ स्थित हैं। यहाँ की कठोर जलवायु के कारण मानव बसावट बहुत कम है।

मध्य हिमालय हिमाद्री के दक्षिण में स्थित है। इसकी ऊँचाई लगभग 3500–4500 मीटर है। यह क्षेत्र गहरी घाटियों, हिमनदियों और पर्वतीय झीलों के लिए प्रसिद्ध है। कश्मीर, कुल्लू और कांगड़ा जैसी घाटियाँ इसी क्षेत्र में आती हैं। यहाँ मौसम अनुकूल होने के कारण बसावट अधिक है।

शिवालिक हिमालय का सबसे दक्षिणी और नया पर्वतीय भाग है। इसकी ऊँचाई 600–1500 मीटर के बीच है। यह अवसादी चट्टानों से बना है और यहाँ की मिट्टी उपजाऊ है। दून घाटियाँ जैसे देहरादून यहाँ स्थित हैं।

उत्तर से दक्षिण तक हिमालय के इन तीनों भागों का अध्ययन करना उसकी भौगोलिक, प्राकृतिक और सांस्कृतिक विविधता को समझने में मदद करता है। यह विभाजन हिमालय की संरचना वनस्पति, जलवायु और मानव जीवन पर इसके प्रभाव को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

सिवम चौधरी,

कक्षा– *10 'ब'*

ये राहें बर्बादी की ओर

आज का समय आधुनिकता, तकनीक, फैशन और तेज़ी से बदलती जीवन-शैली का है। मनुष्य अपनी सुविधा और आराम के लिए हर दिन नए साधन खोजता रहता है। लेकिन इस आधुनिक संस्कृति के पीछे एक कड़वी सच्चाई छिपी है,हमारी वर्तमान जीवन-शैली धीरे-धीरे पर्यावरण की सबसे बड़ी दुश्मन बनती जा रही है। जिस धरती ने हमें जीवन दिया, उसी के लिए आज की संस्कृति एक नई चुनौती बन गई है। यह सच में बर्बादी की ओर बढ़ती हुई राह है।

सबसे पहले, उपभोक्तावाद, यह वर्तमान संस्कृति की सबसे बड़ी कमजोरी है। लोग जरूरत से ज्यादा चीज़ें खरीदते हैं जैसे कि नए कपड़े, नई मोबाइल, नए गैजेट्स, फास्ट फूड और प्लास्टिक पैकिंग। इन चीजों को बनाने में फैक्ट्रियाँ अधिक ऊर्जा, अधिक संसाधन और अधिक रसायनों का उपयोग करती हैं, जिससे प्रदूषण बढ़ता है। इतना ही नहीं, प्लास्टिक और इलेक्ट्रॉनिक कचरा धरती को लंबे समय तक जहरीला बनाए रखता है। इस तरह हमारी आज की आदतें पर्यावरण के लिए खतरा बन रही हैं।

दूसरी तरफ, शहरीकरण और विकास की होड़ ने कई सारे जंगलों को तेजी से खत्म कर दिया है। बड़ी-बड़ी इमारतें, सड़कें, मॉल, इंडस्ट्रीज़ और कॉलोनियाँ बनाने के लिए हजारों पेड़ों को काटा जाता है। इससे न सिर्फ हवा की गुणवत्ता खराब होती है, बल्कि पक्षियों और जानवरों का प्राकृतिक घर भी नष्ट हो जाता है। वन कटाई ग्लोबल वार्मिंग को भी बढावा देती है, जिससे मौसम असामान्य और असंतुलित होता जा रहा है।

वर्तमान संस्कृति का एक और बड़ा नुकसान है,वाहनों की बढ़ती संख्या। आजकल हर घर में एक से ज्यादा वाहन होना सामान्य बात हो गई है। इनसे निकलने वाला धुआँ वायु प्रदूषण और ग्रीनहाउस गैसों को बढ़ाता है, जो धरती के तापमान में खतरनाक वृद्धि करते हैं। इसका असर नदियों, समुद्रों, पहाड़ों, फसलों और मानव स्वास्थ्य पर पड़ता है।

फास्ट-फूड संस्कृति भी पर्यावरण को नुकसान पहुँचा रही है। पैकिंग के लिए उपयोग होने वाला प्लास्टिक नदियों, झीलों और समुद्रों में पहुँचकर जल प्रदूषण और जलचरों के लिए खतरा बन जाता है। मछलियाँ, कछुए, पक्षी और कई जीव प्लास्टिक निगल कर बीमार हो जाते हैं। यह साफ़ संकेत है कि हम प्रकृति के साथ कितना अनुचित व्यवहार कर रहे हैं।

वर्तमान संस्कृति में सुविधा इतनी बड़ी बन गई है कि लोग प्रकृति की कीमत पर हर चीज़ चाहते हैं।जैसे :ज्यादा बिजली, ज्यादा ईंधन, ज्यादा सामान और ज्यादा आराम। लेकिन अगर यही आदतें जारी रहीं, तो आने वाला समय बहुत कठिन होगा। यह रास्ता सच में बर्बादी की ओर जाता है।

लेकिन आशा अभी भी है। यदि हम टिकाऊ जीवन अपनाएँ, कम प्लास्टिक उपयोग करें, पेड़ लगाएँ, सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करें, ऊर्जा बचाएँ और प्रकृति के प्रति जिम्मेदार बनें तो हम इस राह को बर्बादी से बचाव की ओर मोड़ सकते हैं।वर्तमान संस्कृति ने पर्यावरण को चुनौती दी है, लेकिन जागरूकता और सही कदमों से हम अपने ग्रह को बचा सकते हैं। प्रकृति हमारी नहीं, हम प्रकृति के हैं,हमें यह बात याद रखनी चाहिए।

सौम्या प्रियदर्शिनी, दसवीं 'स'

पुस्तकालय विद्या का मंदिर

पुस्तकालय वह पवित्र स्थान है जहाँ ज्ञान का असीम खजाना सुरक्षित रहता है। भारत में शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में एक प्रमुख संस्था है, जो विद्यार्थियों, शिक्षकों और साहित्य प्रेमियों को गुणवत्तापूर्ण पुस्तकें उपलब्ध कराता है। इसकी स्थापना शिक्षा के प्रसार और ज्ञान के विकास के उद्देश्य से की गई है, और यह न केवल एक पुस्तक दुकान है बल्कि एक बड़ा शैक्षिक संगठ्न भी है, जिसकी सेवाएँ हमारे सबसे महत्वपूर्ण मार्गदर्शक होती हैं। यह मंदिर न केवल हमें सही मंन, सही सोच और सकारात्मक ऊर्जा प्रदान करती है, बल्कि ये न केवल पढ़ने में सहायता करती है बल्कि हमारी भाषा, शब्दावली, व्यक्तित्व और आत्मविश्वास भी विकसित करती है। कहानियाँ, जीवनियाँ और विविध साहित्यिक रचनाएँ हमें ईमानदरी, परिश्रम, सत्य, साहस और करुणा जैसे जीवन-मूल्यों को अपनाने की प्रेरणा देती हैं। पुस्तकालय में इतिहास, विज्ञान, साहित्य, गणित, कला और संस्कृति जैसी महत्वपूर्ण विषयों की पुस्तकें रखी होती हैं। ये पुस्तकें हमें तार्किक, विचारशील और विवेकपूर्ण मन विकसित करने में मदद करती हैं। पुस्तक पढ़ने से न केवल हमारी समझ बढ़ती है बल्कि हमारी कल्पनाशक्ति को समझदारी से उपयोग करने की जिम्मेदार नागरिक बनने में सहायता होती है। पुस्तकालय विभिन्न प्रकार के पाठकों के लिए निःशुल्क पुस्तक पढ़ने की सुविधा प्रदान करता है और स्वस्थ पाठक वर्ग का विकास करता है। ये पुस्तकें हमारी कल्पनाशक्ति को नया आकार देती हैं और हमें नए विचारों की दुनिया में ले जाती हैं, जहाँ हम बड़े सपने देखना और उन्हें पूरा करने का मार्ग खोज पाते हैं। जब भी कोई व्यक्ति पुस्तक पढ़ता है, वह ज्ञान के एक विशाल मंदिर में प्रवेश करता है, जहाँ हर पन्ने पर नई सीख, नया विचार और नई प्रेरणा उसका इंतजार करती है। इसी कारण कहा जाता है कि पुस्तकालय कागज़ के पन्नों का संग्रह नहीं, बल्कि विद्या का वह पवित्र मंदिर है जो हर पाठक के जीवन को प्रकाश, प्रेरणा और बुद्धिमत्ता से भर देता हैं।

फलक

कक्षा 10 'स'

ग्लोबल वार्मिंग: एक बड़ा खतरा

ग्लोबल वार्मिंग आज पूरी दुनिया के लिए एक बड़ा खतरा बन गई है, क्योंकि इससे पृथ्वी का तापमान लगातार बढ़ रहा है और मौसम का संतुलन बिगड़ रहा है। यह मुख्य रूप से कार्बन डाइऑक्साइड, मीथेन और अन्य हानिकारक गैसों के कारण होती है, जो फैक्ट्रियों, वाहनों, एसी, फ्रिज और जीवाश्म ईंधन जलाने से वायुमंडल में जमा हो जाती हैं। इन गैसों की परत सूरज की गर्मी को बाहर नहीं जाने देती, जिससे धरती का तापमान बढ़ता जाता है और इसे ही ग्लोबल वार्मिंग कहा जाता है। इसके परिणामस्वरूप तेज गर्मी, अनियमित बारिश, बाढ़, सूखा, ग्लेशियरों का पिघलना और समुद्र का स्तर बढ़ना जैसी समस्याएँ बढ़ रही हैं, जिनका सीधा असर किसानों, जानवरों और आम लोगों के जीवन पर पड़ रहा है। भारत जैसे देश में अनिश्चित मानसून, लू की लहरें और फसलों का नुकसान ग्लोबल वार्मिंग के गंभीर संकेत हैं। इस खतरे को कम करने के लिए ज्यादा से ज्यादा पेड़ लगाना, बिजली की बचत करना, निजी वाहनों की जगह साइकिल, पैदल चलना या सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करना, प्लास्टिक का कम इस्तेमाल करना और सौर व पवन ऊर्जा जैसे स्वच्छ स्रोत अपनाना ज़रूरी है। छोटी-छोटी आदतों में बदलाव करके भी हर छात्र और नागरिक ग्लोबल वार्मिंग के इस बड़े खतरे को कम करने में अपना योगदान दे सकता है। ग्लोबल वार्मिंग को रोकने के लिए हर व्यक्ति को पेड़ लगाने, बिजली बचाने, प्लास्टिक कम करने, साइकिल या बस का इस्तेमाल करने और सूरज - हवा से बिजली बनाने जैसे छोटे कदम उठाने चाहिए। अगर सब मिलकर प्रयास करें तो इस खतरे को कम किया जा सकता है।

विशाका

कक्षा 10 'स'

कृत्रिम बुद्धिमत्ता और हम

आज का युग विज्ञान और तकनीक का युग है। इसी तकनीकी क्रांति की एक महत्वपूर्ण देन है कृत्रिम बुद्धिमत्ता। कृत्रिम बुद्धिमत्ता ऐसी तकनीक है जिसमें मशीनों को मनुष्य की तरह सोचने, सीखने और निर्णय लेने की क्षमता दी जाती है। वर्तमान समय में इसका प्रभाव हमारे जीवन के लगभग हर क्षेत्र में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

शिक्षा के क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने पढ़ाई को अधिक सरल और रोचक बना दिया है। ऑनलाइन कक्षाएँ, स्मार्ट लर्निंग ऐप्स और व्यक्तिगत अध्ययन योजनाएँ विद्यार्थियों की समझ को बेहतर बनाने में सहायक हैं। और अब छात्र अपनी गति से सीख सकते हैं और अपनी कमजोरियों पर विशेष ध्यान दे सकते हैं।

स्वास्थ्य क्षेत्र में भी कृत्रिम बुद्धिमत्ता का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। बीमारियों की पहचान, मेडिकल रिपोर्ट का विश्लेषण और रोबोटिक सर्जरी जैसे कार्यों में कृत्रिम बुद्धिमत्ता समय और जीवन दोनों की रक्षा कर रही है। इससे इलाज अधिक सटीक और तेज़ हुआ है।

इसके अलावा, बैंकिंग, परिवहन, कृषि और उद्योग जैसे क्षेत्रों में भी कृत्रिम बुद्धिमत्ता का व्यापक उपयोग हो रहा है। ऑनलाइन भुगतान, ट्रैफिक नियंत्रण, फसल की गुणवत्ता की पहचान और स्वचालित मशीनें कार्यक्षमता बढ़ा रही हैं।

हालाँकि, कृत्रिम बुद्धिमत्ता के बढ़ते प्रभाव के साथ कुछ चुनौतियाँ भी सामने आई हैं। रोजगार पर इसका प्रभाव, डाटा की सुरक्षा और मशीनों पर अत्यधिक निर्भरता जैसे मुद्दों पर गंभीरता से विचार करना आवश्यक है।

अंत में कहा जा सकता है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता मानव जीवन को सुविधाजनक और उन्नत बना रही है। यदि इसका उपयोग सही दिशा और नैतिक मूल्यों के साथ किया जाए, तो यह भविष्य को और भी उज्ज्वल बना सकती है।

विजयंत साहू ,10 'स'

ई-गवर्नेंस का बढ़ता प्रभाव

आज के डिजिटल युग में शासन व्यवस्था तेजी से तकनीक आधारित हो रही है। सरकार और नागरिकों के बीच संवाद को आसान, पारदर्शी और प्रभावी बनाने के लिए "ई-गवर्नेंस" एक महत्वपूर्ण साधन बन चुका है। ई-गवर्नेंस का अर्थ है—सरकारी सेवाओं और प्रक्रियाओं को सूचना प्रौद्योगिकी की सहायता से ऑनलाइन उपलब्ध कराना।

सबसे बड़ा प्रभाव यह है कि सरकारी सेवाएँ अब अधिक सुगम हो गई हैं। पहले जहाँ किसी प्रमाण पत्र, शिकायत या दस्तावेज़ के लिए लोगों को बार-बार कार्यालयों के चक्कर लगाने पड़ते थे, वहीं अब अधिकांश सेवाएँ घर बैठे ऑनलाइन उपलब्ध हैं। आधार, पैन, पासपोर्ट, बिजली बिल, राशन कार्ड, पेंशन, टैक्स—सभी सेवाओं में डिजिटल प्रक्रिया ने समय की बचत और सुविधा बढ़ाई है।

ई-गवर्नेंस ने पारदर्शिता को भी मजबूत किया है। ऑनलाइन रिकॉर्ड, भुगतान और ट्रैकिंग सिस्टम के कारण भ्रष्टाचार की संभावनाएँ कम होती हैं। नागरिक अपने आवेदन की स्थिति स्वयं देख सकते हैं, जिससे जवाबदेही बढ़ती है। डिजिटल प्लेटफॉर्म जैसे *डीजी-लॉकर, उमंग ऐप, जनधन पोर्टल* ने सरकारी कार्यों को सरल और भरोसेमंद बनाया है।

इसके अलावा, ग्रामीण और दूरदराज क्षेत्रों में भी तेजी से डिजिटल सेवाएँ पहुँच रही हैं। कॉमन सर्विस सेंटर (CSC) और मोबाइल आधारित सेवाओं ने ग्रामीण जनता को भी सरकारी योजनाओं का लाभ आसानी से दिलाना शुरू किया है। यह डिजिटल समावेशन (Digital Inclusion) देश के विकास के लिए एक बड़ा कदम है।

अंत में, यह कहा जा सकता है कि ई-गवर्नेंस ने भारतीय प्रशासनिक प्रणाली को अधिक तेज, पारदर्शी, उत्तरदायी और पहुँच योग्य बनाया है। भविष्य में तकनीक के और विकास के साथ इसकी उपयोगिता और भी बढ़ेगी। ई-गवर्नेंस वास्तव में "अच्छे शासन" की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

सोनाक्षी स्वीन्द्र निंबालकर
कक्षा १० 'ब'

स्कूल की वो पहली घंटी

सुबह-सुबह की भागम-भाग, बैग कंधों का बोझ,
नींद अभी तक आँखों में है, फिर भी स्कूल का जोश।

स्कूल की वो पहली घंटी, दौड़ के जाना क्लास,
"लेट हुआ मैं" सोच-सोच के, बढ़ जाती है साँस।

टिफ़िन में माँ का पराँठा, खुशबू फैले चारों ओर,
दोस्तों संग बाँट के खाना, यहीं पे मिलता प्यार घनघोर।

मैदानों में भागते बच्चों की, मिट्टी से सनी शर्ट,
हार-जीत से बढ़कर लगती, संग साथ की क़ीमत।

पीरियड-पीरियड बदलती घड़ियाँ, बोर करें कुछ क्लास,
फिर भी सबको प्यारा लगता, लंच ब्रेक वाला टाइम ख़ास।

टीचर डाँटें, टीचर सराहें, कॉपी भरती लाल,
इनहीं छोटी-छोटी यादों से, बनती ज़िंदगी की हाल।

एग्ज़ामों की रातें जागना, "कल से पढ़ूँगा" वाली कसम,
रोल नंबर की पुकार में ही, धड़कन हो जाए कम।

अलविदा के दिन जब रो पड़ते, हँसते-हँसते सारे यार,
तब समझ आए स्कूल हमारा, था एक छोटा-सा संसार।

आज भले ही बड़े हो जाएँ, राहें हों कितनी दूर,
दिल के किसी कोने में अब भी, ज़िंदा है अपना स्कूल।

सिमरन
कक्षा 10 'ब'

दक्षिण भारत के पर्वतीय स्थल

दक्षिण भारत अपनी प्राकृतिक सुंदरता और प्राचीन पर्वत-श्रृंखलाओं के कारण हमेशा से यात्रियों के लिए आकर्षण का केंद्र रहा है। यहाँ की जलवायु, हरियाली, झरने, घने जंगल और बादलों से घिरी घाटियाँ एक ऐसा अनुभव देती हैं जिसे शब्दों में बाँधना मुश्किल है। दक्षिण भारत के ये पर्वतीय क्षेत्र न केवल पर्यटन के लिए मशहूर हैं, बल्कि यहाँ की संस्कृति, कुटीर कृषि और वन्यजीवन भी इन स्थानों को विशिष्ट बनाते हैं।

पश्चिमी घाट दक्षिण भारत के प्रमुख पर्वतीय क्षेत्रों का आधार हैं। यह पर्वत-श्रृंखला अरब सागर के समानांतर चलती है और अपनी जैव-विविधता, ऊँची पहाड़ियों और घने जंगलों के लिए जानी जाती है। तमिलनाडु में स्थित ऊटी नीलगिरि की नीली पहाड़ियों के बीच बसा एक पुराना और प्रसिद्ध हिल स्टेशन है। कोडाईकनाल अपनी शांत झीलों, पाइन के पेड़ों और धुँधले मौसम के लिए जाना जाता है। केरल का मुन्नार यहाँ की चाय की ढलानों और ऊँचाई पर बसे दृष्टि-बिंदुओं के कारण बेहद लोकप्रिय है। कर्नाटक का कूर्ग घने जंगलों, कॉफी बागानों और झरनों से युक्त एक शांत व प्राकृतिक क्षेत्र है। इसी तरह वायनाड अपनी गुफाओं, वनों और पहाड़ियों से एक अलग अनुभव प्रदान करता है।

पूर्वी घाट की पर्वत-श्रृंखलाएँ अपेक्षाकृत कम ऊँचाई वाली हैं, पर उनका शांत वातावरण और सांस्कृतिक विविधता यात्रियों को खींचती है। आंध्र प्रदेश की अराकू घाटी अपनी ठंडी जलवायु, कॉफी बागानों और बोर्रा गुफाओं के लिए प्रसिद्ध है। तमिलनाडु का यरकौड शैवरॉय पहाड़ियों में स्थित है और अपने संतरे के बागानों, झीलों और सादगीपूर्ण माहौल के कारण लोकप्रिय हो रहा है। पूर्वी घाट का यह क्षेत्र उन यात्रियों के लिए उपयुक्त है जो भीड़भाड़ से दूर प्राकृतिक शांति की खोज में हों।

इन सभी पर्वतीय स्थलों की विशेषता यह है कि प्रत्येक स्थान का अपना अलग सौंदर्य और अपनी विशिष्ट पहचान है। कहीं चाय के बागान हैं, कहीं कॉफी की खुशबू, कहीं धुँध और कहीं शांत जंगल। इसलिए दक्षिण भारत के पर्वतीय स्थल हर प्रकार के यात्री—प्रकृति प्रेमी, साहसिक पर्यटक, फोटोग्राफी के शौकीन या शांत वातावरण खोजने वालों—सभी को यादगार अनुभव प्रदान करते हैं।

सिवम चौधरी, कक्षा– *10 'स'*

प्राचीन संस्कृति पर्यावरण मित्र।

प्राचीन भारतीय संस्कृति में पर्यावरण संरक्षण का गहरा महत्व रहा है और यह वास्तव में पर्यावरण मित्र रही है।भारत की प्राचीन संस्कृति को अगर किसी एक शब्द में परिभाषित किया जाए, तो वह है– संतुलन। यह संतुलन केवल सामाजिक जीवन में ही नहीं, बल्कि मनुष्य और प्रकृति के बीच भी देखने को मिलता है। हमारे पूर्वज प्रकृति को केवल संसाधन नहीं, बल्कि एक जीवंत शक्ति के रूप में देखते थे। इसी सोच ने भारतीय संस्कृति को जन्म से ही पर्यावरण–मित्र बनाया।भारत के सांस्कृतिक धरातल पर पर्यावरण का अत्यधिक महत्वपूर्ण स्थान रहा हैं। पर्यावरण के संरक्षण में प्राचीन भारतीय परम्पराओं का विशेष योगदान हैं।प्राचीन संस्कृति में लोगों की जीवन शैली अत्यंत साधारण होती थी। तब लोग अपनी जरूरत को सीमित रखते थे और अत्यधिक उपभोग से बचते थे।जिससे पर्यावरण को कोई नुकसान नहीं पहुंचता था। उस समय पेड़, नदियां, पर्वत और पशु-पक्षी।देवी देवताओं से जुड़े थे।जिससे उनकी पूजा और संरक्षण की भावना बढ़ती थी। लोग रेफ्रिजरेटर के स्थान पर मिट्टी के बर्तनों घरों का उपयोग करते थे। उसे समय में जल प्रबंधन के लिए लोग तालाबों को और सरोवरों का निर्माण करते थे और नदियों की पूजा करके जल स्रोतों के महत्व को समझते थे। इन तरीकों से प्राचीन संस्कृतियाँ पर्यावरण के साथ संतुलन बनाती थीं, जबकि आधुनिक संस्कृति अक्सर प्रकृति का अत्यधिक दोहन करती है, जिससे प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन जैसी समस्याएँ पैदा होती हैं।

कोमल कुमारी झा, 10 'स'

किसानः धरती का वीर योद्धा

हल को अपनी तलवार समझे,
मिट्टी को रणभूमि मान,
धूप-छाँव में लड़ता रहता,
वो धरती का सच्चा वीर किसान।

पसीने की ढाल पहनकर,
आँधियों से टकरा जाता,
संग्राम उसका मौसम से है,
पर हर बार जीत ही पाता।

बीजों में उम्मीद बोता,
खेतों में सपने उगाता,
भूखे पेटों की सेना को,
अन्न का हथियार दिलाता।

कभी सूखा, कभी बाढ़ आए,
फिर भी कदम न डगमगाए,
हिम्मत उसकी फसल बनकर,
हर संकट को मात दबाए।

सलाम है ऐसे योद्धा को,
जो बिना किसी शोर-गुल के,
देश की रक्षा करता हर दिन,
अपनी मेहनत की फसल से।

शेख इरशाद

कक्षा 10 'ब'

राष्ट्रीय सैन्यदल (NCC)

दुनिया के देशों के बीच शस्त्रों की होड़ मची हुई है। शांति खतरे में है। भारत वर्ष का कुछ पड़ोसी देशों से अच्छा संबंध नहीं है। आज़ादी हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। हमें इसकी रक्षा हर कीमत पर करनी चाहिए। हमारे देश की सुरक्षा की यह माँग है कि देश के सभी नौजवानों को सैनिक शिक्षा दी जानी चाहिए ताकि जरूरत पड़ने पर उन सभी की सेवाएं उपलब्ध हो सकें। इसी अभिप्राय से 1948 ई. में एन.सी.सी. एक्ट पास किया गया। एन.सी.सी. के दो विभाग हैं- सीनियर और जूनियर। सीनियर डिविजन कॉलेजों में पढ़नेवाले विद्यार्थियों के लिए तथा जूनियर डिविजन स्कूलों में पढ़नेवाले विद्यार्थियों के लिए है। जो विद्यार्थी एन.सी.सी. में भर्ती होते हैं वे कैडेट कहलाते हैं। सीनियर डिविजन के कैडेटों को ड्रिल, शस्त्र-संचालन, नक्शा पाठ, व्यूहरचना, प्राथमिक चिकित्सा और नागरिकता का प्रशिक्षण दिया जाता है। जूनियर डिविजन के कैडेटों को ड्रिल, प्रारंभिक नक्शापाठ, प्रारंभिक व्यूहरचना, प्राथमिक चिकित्सा तथा नागरिकता का प्रशिक्षण दिया जाता है। सेना की तरह एन.सी.सी. की भी तीन शाखाएँ है- स्थल सेना, वायु सेना एवं नौ सेना।

कोमल

कक्षा – सातवीं 'स'

केंद्रीय विद्यालय संगठन का स्थापना दिवस

केंद्रीय विद्यालय संगठन का स्थापना दिवस प्रत्येक वर्ष 15 दिसंबर को भारत के शैक्षिक कलेंडर में एक ऐतिहासिक और महत्वपूर्ण अवसर होता है। यह दिन केवल एक तारीख का जश्न नहीं है, बल्कि एक ऐसे संगठन की गौरवशाली यात्रा का सारणोत्सव है जिसने पिछले छह दशकों में भारत में स्कूली शिक्षा के परिदृश्य को परिभाषित और आकार दिया है। यह एक राष्ट्रीय संस्था की नींव का प्रतीक है। जिसका मूल उद्देश्य केन्द्र सरकार के कर्मचारियों, विशेषकर रक्षा और अर्थ–सैन्य कर्मियों के बच्चों के लिए शैक्षिक निरंतरता सुनिश्चित करना था। इस प्रकार 15 दिसंबर, 1963 को 20 रेजिमेंटल स्कूलों को अपने अधिकार में लिया गया, जो बाद में एक विशाल शैक्षिक महाजाल केन्द्रीय विद्यालय संगठन में बदल गया। संगठन को औपचारिक रूप से 15 दिसंबर, 1965 को सोसायटी पंजीकरण अधिनियम, 1860 के तहत एक स्वायत्त निकाय के रूप में पंजीकृत किया गया, जिसने इसकी भविष्य की दिशा निर्धारित की।

के.वि.सं. का संचालन एक गहरे और प्रेरक दर्शन द्वारा निर्देशित होता है, जो इसके आदर्श वाक्य "तत् त्वं पूषन अपावृणु" या "अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाना" में समाहित है। यह आदर्श वाक्य ज्ञान के सार्वभौमिक प्रकाश के माध्यम से अज्ञान के अंधकार को दूर करने के संगठन के अटूट मिशन को प्रतिध्वनित करता है।

प्रनीषा पी.
कक्षा – आठवीं 'ब'

हिन्दी

हिन्दी भाषा भारत की पहचान और गौरव का प्रतीक है। यह विश्व की सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है और भारत की 'राजभाषा' (Official Language) का दर्जा रखती है। संस्कृत भाषा से जन्मी हिन्दी अपनी लिपि 'देवनागरी' के लिए जानी जाती है, जो वैज्ञानिक रूप से अत्यंत सटीक है। हिन्दी न केवल संवाद का माध्यम है, बल्कि यह हमारी समृद्ध संस्कृति, साहित्य और परंपराओं को भी संजोए हुए है।

आज के समय में हिन्दी केवल भारत तक ही सीमित नहीं है, बल्कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी इसकी लोकप्रियता बढ़ रही है। फिजी, मॉरीशस और नेपाल जैसे देशों में भी हिन्दी व्यापक रूप से बोली जाती है। सोशल मीडिया और तकनीक के दौर में हिन्दी का प्रभाव और भी बढ़ गया है। प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को भारत में 'हिन्दी दिवस' मनाया जाता है, जो हमें अपनी मातृभाषा के प्रति सम्मान प्रकट करने और इसके प्रचार–प्रसार का संदेश देता है। हिन्दी की सरलता और मिठास इसे दिलों को जोड़ने वाली भाषा बनाती है।

नाम - सुप्रिया राठौर

कक्षा – आठवीं 'ब'

मेरी संस्कृति

भारत की संस्कृति विश्व की सबसे पुरानी संस्कृति है। मूल रूप से यह 'वैदिक' युग से आरंभ हुई। । धीरे–धीरे समय के साथ इस पर विभिन्न धर्म, संप्रदाय, जाति, मत और आचार–विचारों का प्रभाव पड़ता गया। हमारे देश की संस्कृति में प्रेम और सहिष्णुता के जो पाठ सिखाए गए हैं, वह विश्व के सामने एक मिसाल है। सामाजिक कार्यक्रमों सहित राष्ट्रीय उत्सवों को एक साथ मनाते हैं। जैसे– गणतंत्र दिवस, खतंत्रता दिवस, गाँधी जयंती आदि। भारत में सभी दिशाओ में 29 राज्य और 7 केंद्र शासित प्रदेश हैं। भारत में 22 भाषाएँ बोली जाती है और ईसाई, इस्लाम, बौध्द, जैन, हिन्दू धर्मों का पालन किया जाता है। भारत की संस्कृति में त्यौहार, नृत्य से संगीत, योग, तंत्र–मंत्र और धार्मिक आस्था का गहरा प्रभाव है। इसके सह–अस्तित्व और वसुधैव कुटुंबकम के मूल दर्शन के साथ जुड़ा हुआ है। भारतीय संस्कृति केवल रीति – रिवाज नहीं, बल्कि जीवन जीने और एकता का पाठ सिखाता है। यह हमारी विरासत है जिसे हमें अगली पीढ़ियों के लिए सहेज कर रखना है, क्योंकि यही हमारे राष्ट्र की असली पहचान है।

प्रीति महापात्र

कक्षा – आठवीं 'ब'

डिजिटल भारत

डिजिटल भारत आधुनिक भारत की प्रगति की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। इसका मुख्य उद्देश्य देश को तकनीकी रूप से सक्षम बनाना और प्रत्येक नागरिक तक डिजिटल सुविधाएँ पहुँचाना है। इस योजना से शासन प्रणाली को सरल, पारदर्शी और प्रभावी बनाया गया है।

डिजिटल भारत के अंतर्गत शिक्षा, स्वास्थ्य, बैंकिंग और प्रशासन के क्षेत्रों में बड़े बदलाव हुए हैं। आज विद्यार्थी ऑनलाइन कक्षाओं, ई-पुस्तकों और शैक्षिक प्लेटफॉर्म के माध्यम से घर बैठे अध्ययन कर रहे हैं। डिजिटल भुगतान प्रणाली ने लेन-देन को सुरक्षित, सरल और तेज़ बनाया है। आधार, डिजिलॉकर और ऑनलाइन प्रमाण-पत्र जैसी सुविधाओं से लोगों का समय और श्रम बच रहा है। इस पहल से ग्रामीण और शहरी भारत की दूरी कम हुई है। गाँवों में इंटरनेट के विस्तार से लोग योजनाओं, रोजगार और जानकारी से जुड़ रहे हैं, जिससे आत्मनिर्भर भारत को मजबूती मिली है।

हालाँकि डिजिटल भारत के सामने डिजिटल साक्षरता की कमी, साइबर सुरक्षा और सीमित इंटरनेट जैसी चुनौतियाँ हैं, पर शिक्षा और जागरूकता से इनका समाधान संभव है। अंततः डिजिटल भारत विकास की नई दिशा देता है। इसका सही और जिम्मेदार उपयोग भारत को एक मजबूत, आत्मनिर्भर और विकसित राष्ट्र बना सकता है।

मनमोहन सिंह मीणा, दसवीं 'ब'

जटायु एक अप्रशंसित वीर

जटायु रामायण का एक महान, साहसी और धर्मप्रिय पात्र है, जिसने अपनी उम्र और कमजोरी की परवाह किए बिना रावण से अकेले लड़कर माता सीता की रक्षा करने का प्रयास किया। सूर्यदेव के सारथी अरुण के पुत्र और सम्पाती के भाई जटायु राजा दशरथ के घनिष्ठ मित्र थे, इसलिए जब राम, लक्ष्मण और सीता पंचवटी में थे, तो जटायु ने स्वयं को उनकी सुरक्षा के लिए समर्पित कर दिया। सीता हरण के समय जब रावण उन्हें आकाश मार्ग से ले जा रहा था, तब जटायु ने तुरंत स्थिति समझी और सीता को बेटी समान मानते हुए रावण को रोकने का निर्णय लिया। वृद्ध होने के बावजूद उन्होंने पूरी शक्ति लगाकर रावण के रथ को रोका, उसके विरुद्ध अपने पंखों, पंजों और चोंच से जोरदार युद्ध किया और उसे घायल भी किया, लेकिन अंत में रावण ने तलवार से उनके पंख काट दिए, जिससे वे गंभीर रूप से घायल होकर गिर पड़े। गिरते समय भी उन्होंने सीता द्वारा गिराए गए गहनों और वस्त्रों के टुकड़ों को देखा और समझ लिया कि यही संकेत राम को सही दिशा दिखाएंगे। जटायु का यह अद्भुत साहस और बलिदान बताता है कि सच्चा धर्म, निष्ठा और मित्रता कैसी होनी चाहिए, और इसी कारण जटायु आज भी त्याग, वीरता और कर्तव्य के सर्वोच्च प्रतीक माने जाते हैं।

द्विजा बृंदा, दसवीं 'ब'

कुछ साहित्यकारों के कथन व पंक्तियाँ

अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी।
आंचल में है दूध और आँखों में पानी॥ — मैथिलीशरण गुप्त

वही मनुष्य है जो मनुष्य के लिए मरे। — मैथिलीशरण गुप्त

अरुण यह मधुमेह देश हमारा, जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा॥
— जय शंकर प्रसाद

दुख ही जीवन की कथा रही, क्या कहूँ आज जो नहीं कही॥
— सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

हम दीवानों की क्या हस्ती है, आज यहाँ कल वहाँ चले।
मस्ती का आलम साथ चला हम धूल उड़ाते जहाँ चले॥ — भगवती चरण वर्मा

खेत हमारे, भूमि हमारी, सारा देश हमारा है।
इसीलिए तो हमको इसका चप्पा चप्पा प्यारा है॥ — नागार्जुन

मैं नीर भरी दुख की बदली — महादेवी वर्मा

कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ, जिससे उथल-पुथल मच जाए।
— बालकृष्ण शर्मा नवीन

जाके प्रिय न राम बैदेही, ताजिए ताहि कोटि बैरी सम
यद्यपि परम सनेही।
परहित सरिस धर्म नहीं भाई। — तुलसीदास

प्रभु जी, तुम चंदन हम पानी। — संत रविदास

मनं के हारे हार है, मन के जीते जीत॥ — कबीरदास

मैया मोरी, मैं नहीं माखन खायौ। — सूरदास

अँसुअन जल सींचि-सींचि प्रेम बेलि बोई। — मीराबाई

या लकुटी और कामरिया पर राज तिहूँपुर को तजि डारों। — रसखान

श्रुति कुशवाह, दसवीं 'स'

भारतीय सेना

किसी भी देश की रक्षा में उस देश की सेना की बहुत बड़ी भागीदारी होती है। बड़ा और अहम हिस्सा होती है। हमारे देश भारत की सेना भारतीय सेना कहलाती है। हमारी भारतीय सेना भारत देश का सुरक्षा कवच है। हमारी भारतीय सेना भारत देश का सुरक्षा कवच है। हमारी भारतीय सेना मौसम की परवाह ना करते हुए दिन-रात सरहदों पर तैनात रहती है। ताकि किसी भी दुश्मन की नजर देश के अंदर झांक ना सके। हमारी भारतीय सेना वर्दी पहने हुए हथियारों से लेस जब सीमाओं पर गश्त करती है। भारतीय सेना हमेशा देश और देशवासि-यों की सुरक्षा हेतु तत्पर रहती है। भारतीय सेना बहादुरी और साहस का दूसरा नाम है। भारतीय थलसेना सेना, वायु सेना तथा नौसेना का मजबूत संगठन है। यह विश्व की ताकतवर सेनाओं में से एक है। तीनों सेनाओं की सर्वोच्च कमान भारत के ~~सम्राट~~ राष्ट्रपति के हाथों में होती है। भारत की रक्षा-मंत्रालय तीनों सेनाओं निर्देश का दायित्व संभालता है।

NAME: YASH
class: 7th 'B'
RollNO: 36

प्रकृति

हरी-हरी खेतों में
बरस रहे हैं बूँदें
खुशी-खुशी से आया सावन
भर गया मेरा आँगन।

ऐसा लग रहा है जैसा
मन की कलियाँ खिल गयी वैसे
ऐसा कि आया बसंत
लेके फूलों का जश्न ।।

धूप से प्यासी मेरे तन को
बूँदों ने दी ऐसी अँगड़ाई
कूद पड़ा मेरा तनमन
लगता है, मैं हूँ एक दामन ।।।

यह संसार है कितना सुंदर
लेकिन लोग नहीं उतने अकलमंद
यही है एक निवेदन
न करो प्रकृति का शोषण ।IV

K. Goutami
IV 'A'
K.V CRPF Hyd
25-26

भारत मे मौलिक कर्तव्य

मौलिक कर्तव्य सभी भारतीयों के लिए पालन करने योग्य महत्वपूर्ण नियम है। ये हमारे संविधान में लिखा है। हमें अपने राष्ट्रीय ध्वज और राष्ट्रगान का सम्मान करना चाहिए। भारत की एकता और शांति की रक्षा करना हमारा कर्तव्य है। हमे अपने पर्यावरण को स्वच्छ रखकर करनी चाहिए। हम सभी लोगो के प्रति दयालु होना चाहिए और जरूरतमंदों की मदद करनी चाहिए। स्कूलों और पार्कों जैसी सार्वजनिक की सुरक्षा करना महत्वपूर्ण है। हमे जो भी काम करना है, उसमें हमेशा अपना सर्वश्रेष्ठ देने का प्रयास करना चाहिए। इन कर्तव्यो का पालन करने से हम गौरवान्वित और जिम्मेदार नागरिक बनते है। सभी को उन स्वतंत्रता सेनानियो का सम्मान करना चाहिए जिन्होंने हमारे देश को बचाया।

Name: YASH
Class: 7
Section: B
Roll No: 36
Subject: Hindi

फूल और मुस्कान

नन्हे नन्हे फूल हम
हंसते गाते रहते हैं।
खुशबू अपनी दुनिया में
हरदम फैलाने रहते हैं।
सूरज की किरणों से हम,
नित चमकना सीखते हैं।
मिलजुल कर सब रहने का,
हुनर जब सीख जाते हैं।

अक्षरा 2 'ब'

शिक्षक

ऊपर ऊपर से वह होते कठोर
ध्यान रहता कक्षा में चारों ओर
कोशिश पूरी रहती है शिक्षक की
बच्चा उनका ना रहे कमजोर
हर एक शब्द को अच्छे से समझते हैं
शिक्षक हर रोज हमें कुछ नया सीखने हैं
शिक्षा से बड़ा कोई वरदान नहीं
गुरु का आशीर्वाद मिले
इससे बड़ा कोई सम्मान नहीं
हमें सिखाते अच्छी बातें
चाहे हम उन्हें कितना सताते
ज्ञान से इंसान को बेहतर बनाते।
गुरु जीवन भर कितना सीखते हैं।

जैनब 2 'ब'

मेरे शिक्षक

जीवन में जो राह दिखाए
सही ढंग से चलना सिखाए,
मात-पिता से पहले आते,
जीवन में सदा आदर पाए।
सबको मान-प्रतिष्ठा जिससे,
सौम्य कर्तव्यनिष्ठा जिससे।
कभी रहा न दूर मैं जिससे,
वह मेरे पथदर्शक है जो।
मेरे मन को गढ़ते जाते
वह ही मेरे शिक्षक कहलाते।
कभी है शांत, कभी है कठोर,
स्वभाव में सदा गंभीर।
मन में दबी रहती है इच्छा,
काश मैं उन जैसा बन पाता,
जो मेरे शिक्षक कहलाते।

सैयदा इनाया कादरी 2 'स'

मेरा देश

मेरा देश भारत है। भारत एक विशाल और विविधताओं से भरा हुआ देश है। यहाँ अनेक धर्म, भाषाएँ, संस्कृतियाँ और परंपराएँ मिलकर देश को सुंदर बनाती हैं। भारत को "विविधता में एकता" का देश कहा जाता है।

भारत का इतिहास बहुत गौरवशाली रहा है। यहाँ महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू, भगत सिंह जैसे महान स्वतंत्रता सेनानियों ने देश को आज़ादी दिलाने के लिए अपने प्राणों की आहुति दी। 15 अगस्त 1947 को हमारा देश स्वतंत्र हुआ।

भारत की राजधानी नई दिल्ली है। यहाँ की राष्ट्रीय भाषा हिंदी है, लेकिन कई अन्य भाषाएँ भी बोली जाती हैं। भारत की संस्कृति, त्योहार, खान-पान और पहनावा बहुत रंग-बिरंगे हैं। दीपावली, होली, ईद और क्रिसमस जैसे त्योहार यहाँ मिल-जुलकर मनाए जाते हैं।

मुझे अपने देश पर गर्व है। मैं एक सच्चा नागरिक बनकर अपने देश की सेवा करना चाहती हूँ। मेरा देश महान है।

ईश्वरी तृतीय 'स'

पहेलियाँ

1. ऐसी कौनसी चीज है जो गर्म होने पर जम जाती है?

उत्तर: अंडा

2. ऐसी कौन सी सब्जी है, उससे तालाऔर चाबी होते हैं?

उत्तर: लौकी

3. ऐसा कौन सा नाम है, जो हिन्दी, अंग्रजी और गणित तीनों के अक्षरों के मिलने से बनता है?

उत्तर: V9ट

4. ऐसा कौन सा जानवर है जो जूते पहनकर सोता है?

उत्तर: घोड़ा

आदर्शिनी 4 'स'

प्रकृति

नीलाअम्बर, हरी धरती,
खुशबू बिखेरे हर इक कली।
नदियाँ गाएँ मीठा गीत,
पवन सुनाए जीवन की रीत।
पर्वत ऊँचे, वन हैं घने,
सूरज चाँद संग सपने सजे।
पक्षी चहकें, फूल खिलें,
प्रकृति में ही सुख-दुख मिलें।
माँ है प्रकृति, जीवनदान,
उसका करना सदा सम्मान।
पेड़ लगाएँ, जल बचाएँ,
सुंदर धरती को हम सजाएँ।

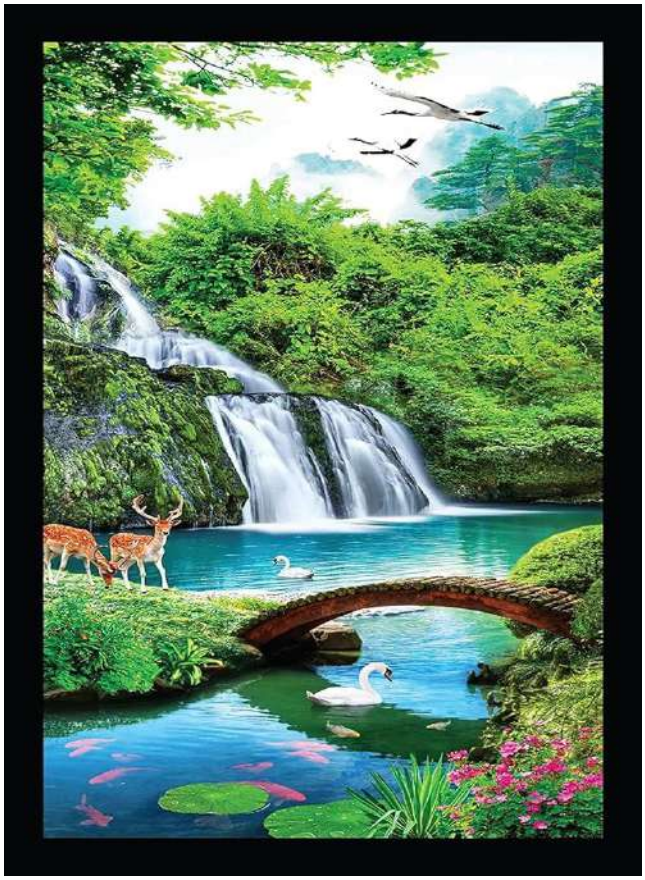

प्रिंस आयूष 5 'ब'

मेरे पापा

पापा जी जब आते हैं,
मेरे लिए सब लाते हैं |
पर कल जब वहां बाजार से आए,
मेरे लिए वह कुछ नहीं लाये |

प्यार से बोले नहीं थे प्यासे,
कहो बेटी में लाता कैसे |
पापा जी की थी मजबूरी,
खर्च हो गई तनख्वाह पूरी |
उनको चिंतित देख-देख कर,
रह गई मेरी बात अधूरी |

मुझे चाहिए केवल प्यार,
नहीं खिलौने की दरकार |
मैं पापा की प्यारी पुत्री,
मुझे चाहिए प्यार अटूट |

अदीबा समायरा 4 'अ'

कर्म की महत्ता

उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः।
न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः

अर्थः मेहनत से ही कार्य पूरे होते हैं, केवल इच्छा करने से नहीं। जैसे सोए हुए शेर के मुंह में हिरण नहीं आते हैं।

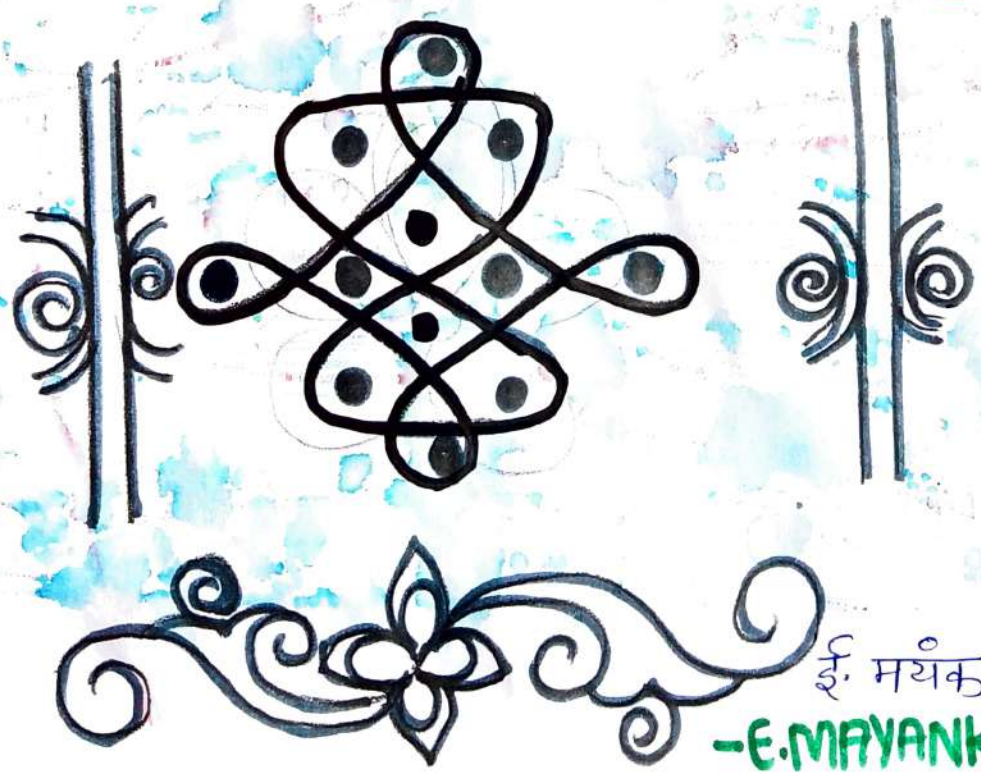

ई. मयंक - VIII A
-E.MAYANK VIII 'A'

संस्कृत कथा- साहसस्य बलम्

एकस्मिन् ग्रामे अर्जुनः नाम युवकः वसति स्म। सः दरिद्रः आसीत्, किन्तु तस्य हृदये साहसम्, सत्यं, श्रद्धा च वसन्ति स्म।

एकदा ग्रामे महत् संकटम् अभवत्। जनाः भय भीताः आसन्। कोऽपि अग्रे गन्तुं न इच्छति स्म।

तदा अर्जुनः उवाच –
"भयः नाशयति बुद्धिम्। साहसं जयति सर्वम्।"

सः धैर्येण अग्रे अगच्छत्।
तस्य निश्चयः दृढः आसीत्।
अल्पेन कालेन संकटं नष्टम् अभवत्।

जनाः उवाच –
"बलं न शरीरात् भवति, बलं मनसः भवति।"

अर्जुनः अपि अवदत् –
"सत्यं मार्गः, साहसं शक्तिः श्रद्धा जीवनम्।"

- उत्तिष्ठ जाग्रत
- अदम्यं साहसम्
- न हि साहसात् परो धर्मः
- आत्मविश्वासः परमं बलम्

जी. संकीर्ति
9A

G. Sankeerthi
9A

गीतम्

लोकहितं मम करणीयम्

मनसा सततं स्मरणीयम्
वचसा सततं वदनीयम्
लोकहितं मम करणीयम्

न भोगभवने रमणीयम्
न च सुखशयने शयनीयम्
अहर्निशं जागरणीयम्
लोकहितं मम करणीयम्।।

न जातु दुःखं गणनीयम्
न च निजसौख्यं मननीयम्
कार्यक्षेत्रे त्वरणीयम्
लोकहितम् मम करणीयम्।।

दुःख सागरे तरणीयम्
कष्टपर्वते चरणीयम्
विपत्तिविपिने भ्रमणीयम्
लोकहितं मम करणीयम्

गहनारण्ये घनान्धकारे
बन्धुजना ये स्थिरा गहवरे
तत्र मया सञ्चरीयम्।
लोकहितं मम करणीयम्।।

नाम - सोम्या राय
Name - Soumya Rai
Class - VIIIA

" शिक्षायाः महत्वम् "

शीर्षकः शिक्षा का महत्वम् (शिक्षायाः महत्वम्)

शिक्षा मानवजीवनस्य मूलाधारः अस्ति।
शिक्षा विना मानवः अज्ञानान्धकारे भ्रमति।
शिक्षा एव मानवस्य नेत्रे भवतः, येन सः सत्यं असत्यं च विवेक्तुं शक्नोति।
अतः शिक्षायाः महत्वं सर्वत्र वर्णितम् अस्ति।
मनुष्यः जन्मना पशुतुल्यः भवति,
परन्तु शिक्षया सः सभ्यः, संस्कृतः च भवति।
शिक्षा मनुष्यस्य बुद्धिं विकासयति,
तस्य विचारशक्तिं वर्धयति,
तथा जीवनमार्गं दर्शयति।
विद्या विनयम् ददाति।
विनयात् याति पात्रताम्।
पात्रत्वात् धनमाप्नोति।
धनात् धर्मं ततः सुखम्।
एतेन श्लोकेन ज्ञायते यत्
शिक्षा मानवजीवनं सुखमयं करोति।
शिक्षा न केवलं ज्ञानं ददाति;
अपि तु सद्गुणान् अपि ददाति।

नाम - आर. कनिष्का
NAME:- R. KANISHKA
CLASS:- 6 'C' Roll:- 11

श्री नारायणम्मा प्रौद्योगिकी संस्थान, हैदराबाद में बूट कैंप का आयोजन

सप्रेम भेंट की पैकिंग की कार्यशाला

बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान की ओर अग्रसर

कक्षाओं में बच्चे और संख्याओं का खेल

अभिभावक-शिक्षक-विद्यार्थी बैठक

परीक्षा पर चर्चा के लिए पोस्टर बनाओ प्रतियोगिता

गणतंत्र दिवस समारोह की झलकियाँ

पतंग बनाओ प्रतियोगिता का आयोजन

मिट्टी के प्रतिरूप बनाओ प्रतियोगिता का आयोजन

गणतंत्र दिवस समारोह की झलकियाँ

हिन्दी पखवाड़े का आयोजन

वार्षिक खेल महोत्सव का आयोजन

वार्षिक खेल महोत्सव का आयोजन

NCC (NATIONAL CADET CORPS)

Unit: 1 (T) AIR SQN NCC

Group: Hyderabad

Directorate: Andhrapradesh & Telangana

SCHOOL NAME: PM SHRI KENDRIYA VIDYALAYA CRPF BARKAS, HYDERABAD

The National Cadet Corps (NCC) unit **AIR WING** of our Vidyalaya was established in the year **2021** with the aim of developing discipline, leadership, character, and a spirit of national service among students. Since its inception, the NCC unit has been actively training cadets and encouraging them to participate in various institutional and camp activities.

So far, three batches of cadets have successfully passed out with an excellent **100% result**. The details are as follows:

S. No.	Academic Year	Status	Result
1	2023	Batch Passed Out	100%
2	2024	Batch Passed Out	100%
3	2025	Batch Passed Out	100%
4	2026	Result Awaited	Awaited

During the current academic year, 45 cadets attended the **Annual Training Camp (ATC)** held from **21st September 2025 to 30th September 2025**. The camp provided valuable exposure in drill, weapon training, physical fitness, leadership exercises, and social service activities. It greatly enhanced the confidence, discipline and teamwork of our cadets.

The NCC unit of our Vidyalaya continues to strive for excellence and remains committed to shaping responsible and dedicated citizens for the nation.

BHEEMANNA DHARAVATHU,

NCC-ANO

BOOKS

Books are magic we can hold,
Filled with stories, new and old.
Every page is full of light,
Teaching us to read and write.
Inside them, time learns to fold itself.
A century can sit on your lap,
a future can whisper from a margin,
a voice long gone can say, I'm still here
They take us places far away,
Across the world or yesterday.
We meet new friends, both brave and kind,
And grow new thoughts inside our mind.
Books do not shout.
They trust silence.
They know that the softest ink
can carry the heaviest truths.
Books help teachers, help us learn,
Show us lessons page by turn.
They teach us how to dream and try,
To ask questions, and wonder why.
When we feel lost or feel unsure,
Books stand strong and help us endure.
Open one and you will see—
A world of hope and discovery.

Nisha Sharma
PRIMARY TEACHER

Defence

The critical function of a sovereign state is to protect its citizens, economy & institutions from both external & internal threats. The force continues beyond combat, they also provide essential support during natural disasters, engage in search & rescue operations, and participate in international peacekeeping missions! The advanced agencies like DRDO & comprising specialized branches, are highly complex. The thick main defense: The ARMY, The NAVY, The AIR FORCE. Ultimately, the defense personnel, guided by nottos like Self, demonstrate like Service Before Self, serving discipline & sacrifice. Serving in unwavering Safety & peace in challenging conditions to ensure the safety and peace of the NATION.

Proud to be an Indian!

Priti Mahapatra
Class-8B

Historical Facts

Napoleon vs Rabbits: of a planned rabbit hunt turned into an attack when hundreds of rabbits surrounded Napoleon instead of fleeing.

Cleopatra's Heritage: The famous Queen of Egypt was actually of Greek (Macedonian) descent, not Egyptian

London Bridge's New Hams: The Old London Bridge was sold and rebuilt in Lake Havasu City, Arizona.

Easter Island Heads Haus Bodies. The famous Moa statues have large, buried bodies.

Short at War: The Anglo-Zunarbar War in 1836 lasted only 38 minutes.

World's Oldest Recipe The oldest known recipe, dated 4,000 BCE, is fen beer.

Mona Lisa's Eyebrows: The Mona Lisa has no eyebrows

The Eiffel Tower for Barcelona: The Eiffel Tower was originally designed for Barcelona.

Arya
Cass: 9 C

RIGHT TO EQUALITY

1) Equality before the law of equal Protection under the law.
2) Prohibition of discrimination on the grounds of religion, caste, sex, or place Of birth.
3) Equality of opportunity in matters of Public employment
4) Abolition of Vatouchability
5) Abolition of titles.
6) The right to equality is one of the Fundamental rights in Indian Constitution.
7) It is generated for all citizens of India.

Harika
Class: 7A

SAVE GIRL CHILD

A Girl child is as important as a boy child. Every girl deserves to be loved, cared for, and educated. Sadly, some people think boys are important and overshadow the needs of girls, and wrong. Girls have the Right to go to school, play, and grow up to be whatever they want. Saving the girl child means giving girls a chance to live a healthy, althy, happy life. We must treat every gisil with Kindness and respect. Together, help girls have a better future and make the world a better place.

In Conclusion, the fight to save the girl child is a fight for humanity's future by ensuring her rights, education, and respect. We build a stronger, more equal nation, proving that a gisil's potential is a nation's greatest asset.

R.Sahara
Class 7A

Education

Education is the fundamental process of acquiring knowledge, skills, values and critical thinking, empowering individuals to build better lives and contribute positively to society by fostering confidence, problem-solving, and informed decision-making, thereby driving personal growth, economic development, and social progress for a more enlightened future.

It illuminates minds, shapes perspectives, and provides opportunities, helping people understand the world, overcome challenges, and achieve their full potential, making it crucial for both personal success and community well-being.

In essence, education transforms individuals from passive recipients to active, capable contributors, making it a cornerstone for a thriving personal life and a progressive society.

— Akanksha Singh
IXth 'C'

The Indian Navy

The Indian Navy (Bharat Nau Sena) is the maritime branch of Indian Armed forces. The president of India is the supreme commander of the Indian Navy.

The chief of Naval staff, a ~~four~~ Blue four-star admiral, Command the Navy. As a blue-water navy, it operates significantly in the 'Persian Gulf Region', the 'Horn of Africa', the strait of Malacca and routinely conducts anti-piracy operations with other navies in the region. It also conducts routine two-to three month-long deployments in the South and East china sear as well as in the western Mediterranean sea simultaneously.

- Founded - 26 January 1950
- Colour - Navy Blue, gold and white
- March - Quick: Jay Bharti
  Slow: Nivand Kak.

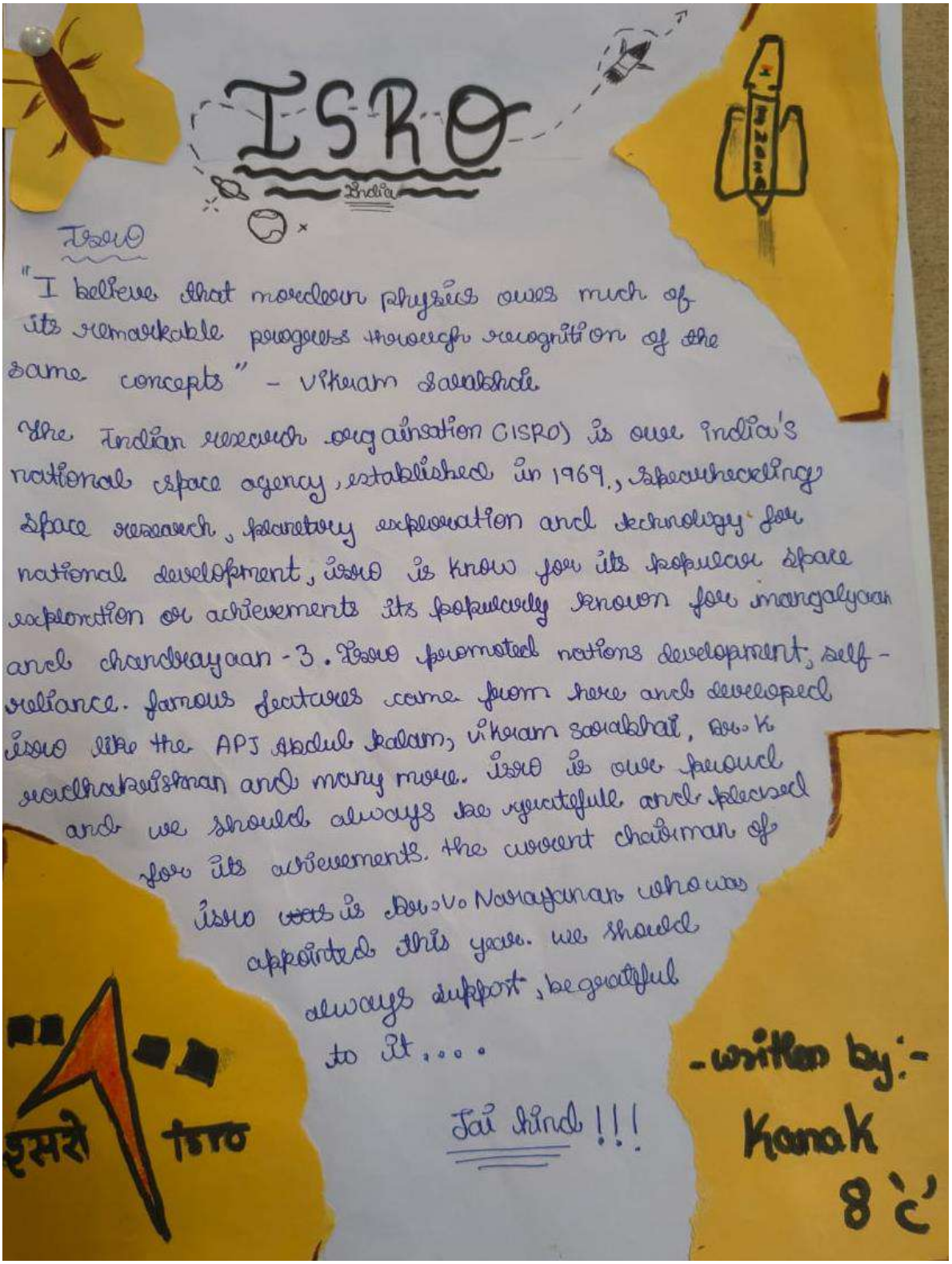

ISRO

India

Isro

"I believe that morden physics owes much of its remarkable progress through recognition of the same concepts" - Vikram Sarabhai

The Indian research organisation (ISRO) is our India's national space agency, established in 1969., spearheading space research, planetary exploration and technology for national development, isro is know for its popular space explortion or achievements its popularly known for mangalyaan and chandrayaan - 3. Isro promoted nations development, self - reliance. famous features come from here and developed isro like the APJ Abdul kalam, vikram sarabhai, Dr. K radhakrishnan and many more. isro is our proud and we should always be greatfule and pleased for its achievements. the current chairman of isro was is Dr. V. Narayanan who was appointed this year. we should always support, be greatful to it....

Jai hind !!!

-written by:-
Kanak
8 'C'

Never Give Up

no matter what is going on
Never give up

Develop the heart
Too much energy in your country
is spent developing the mind
instead of the heart
Develop the heart

Be compassionate
not just to your friends
but to everyone
Be compassionate

Work for peace
in your heart and in the world
Work for peace

and I say again

Never give up
No matter what is happening
No matter what is going on around you

Never Give Up...

– The Dalai Lama